पंजीयन क्र. 50309/85 के अन्तर्गत भारत सरकार के समाचार पत्रों के रजिस्ट्रार द्वारा पंजीकृत। डाक पंजीयन क्र. म.प्र./261/ भोपाल/2006-08

बाल विज्ञान पत्रिका

अप्रैल 2008 • 15 रुपए

चकमक

चाँद

एक बड़ा रुपहला तारा
जैसे थाली भर पारा
या परी भुलक्कड़ भूली
अपना सिंगार-पिटारा।

एक झिलमिल-सा आईना
टीका है जड़ा नगीना
नीले सरुवर में मानो
एक श्वेत कमल रसभीना।

नभ की दीवार घड़ी है
बिन्दी, जो रतन जड़ी है
खालो, है बर्फ का गोला
खेलो, वह बॉल पड़ी है।

वह चाँदी का सिक्का है
या ताश-तुरुप इक्का है
कुरमुर पापड़ चावल का
या आलू का टिक्का है।

क्या साइज़ है इडली का
या प्याला भरा दही का?
मीठा लड्डू मावा का
या घेवर फीका-फीका।

रबड़ी का भरा कटोरा
बिखरा मिसरी का बोरा
माँ धरती नीली-नीली
क्यों मामा गोरा-गोरा।

गिरिजा कुलश्रेष्ठ

हलीम चला चाँद पर

हलीम ने सोचा – आज मैं चाँद पर जाऊँगा। चलते-चलते अँधेरा हो गया। हलीम को डर लगने लगा। उसको चाँद तक का रास्ता पता नहीं था। वह **रॉकेट** के कारखाने में गया और एक **रॉकेट में सवार होकर** चल दिया। थोड़ी देर में उसे चाँद दिखा। वह खुश हो गया। चाँद पर हलीम को खूब सारे **गड्ढे** दिखे। और बड़े-बड़े पहाड़ भी। लेकिन वहाँ **कहीं भी** पेड़ या जानवर नहीं थे। लोग भी नहीं थे। हलीम ने सोचा – **यह** भी कोई जगह है। चलो वापिस घर चलें। वह **रॉकेट** में बैठकर घर लौट आया।

स्वामी रैक्स डी रोज़ारियो प्रकाशक, मुद्रक सी. एन. सुब्रह्मण्यम की ओर से निदेशक, एकलव्य फाउण्डेशन द्वारा एकलव्य, ई-10 शंकर नगर, 61/2 बस स्टॉप के पास, भोपाल-462016, (म.प्र.) से प्रकाशित तथा आर. के. सिक्युप्रिन्ट प्रा. लि. प्लॉट नम्बर 15-बी, गोविन्दपुरा इंडस्ट्रियल एरिया, गोविन्दपुरा, भोपाल - 462021 (फोनः 0755 - 2687589) से मुद्रित। सम्पादकः सुशील शुक्ल।